ओशो सुगंधा

एवं

पुष्पांजलि

का पठनीय एवं श्रवणीय संयुक्तांक

परमगुरु के जन्मदिवस पर उन्हें शत् शत् नमन

परमगुरु ओशो के चरणों में समर्पित

ओशो सुगंधा

पठनीय एवं श्रवणीय मासिक ई-पत्रिका

वर्ष : 1, अंक : 12 ☐ दिसम्बर 2022

प्रेरणा स्त्रोत :

स्वामी शैलेन्द्र सरस्वती एवं माँ अमृत प्रिया

संपादन एवं संकलन : **माँ मोक्ष संगीता**

अन्य सहयोग : **मस्तो बाबा**

कला एवं साज-सज्जा : **आनंद संदेश**

E-mail : contact@oshofragrance.org

पुष्पांजलि

पठनीय PDF एवं श्रवणीय मासिक ई-पत्रिका

वर्ष 3 / अंक 35 / दिसम्बर 2022

संपादक :

गोविन्द मूँदड़ा

परामर्श मंडल :

डॉ. विष्णु सक्सेना
डॉ. सुरेश अवस्थी
डॉ. कीर्ति काले
बी.एल.आच्छा
रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु'

रेखांकन :

संदीप राशिनकर

शब्द संयोजन :

विवेक अग्रवाल

साज-सज्जा :

मनदीप मालपानी

विस्तारक मंडल : **राजेश मानव**, नई विधा, निमच

प्रकाशक : **गिरिराज मूँदड़ा**

प्रकाशन स्थल : 24/4, फर्स्ट क्रास स्ट्रीट,
किलपॉक गार्डन कॉलोनी, चेन्नई - 600010.

8610502230 (केवल संदेश हेतु)

send@pushpanjalee.com

मूल्य : मात्र आपकी मुस्कान

इस अंक की विशेषताएँ

नीचे दर्शाए गए बटन चिह्न इस पत्रिका में मिलेंगे
जिनके स्पर्श मात्र से वे सक्रिय हो जाएँगे

	इस बटन को स्पर्श करने से आप संगीत का **ऑडियो** सुन पाएँगे
इस बटन को स्पर्श करने से आप वह **वीडियो** देख पाएँगे	
	इस बटन को स्पर्श करने से **व्हाट्स एप** संदेश भेज पाएँगे
इस बटन को स्पर्श करने से उस जगह का **गूगल मेप** खुलेगा	
	इस बटन को स्पर्श करने से **पी.डी.एफ.** फाइल खुल जाएगी
इस बटन को स्पर्श करने से आप उस **वेब साइट** पर पहुँच जाएँगे	
	इस बटन को स्पर्श करने से आप हिंदी में **क्वोरा** पर पढ़ पाएँगे

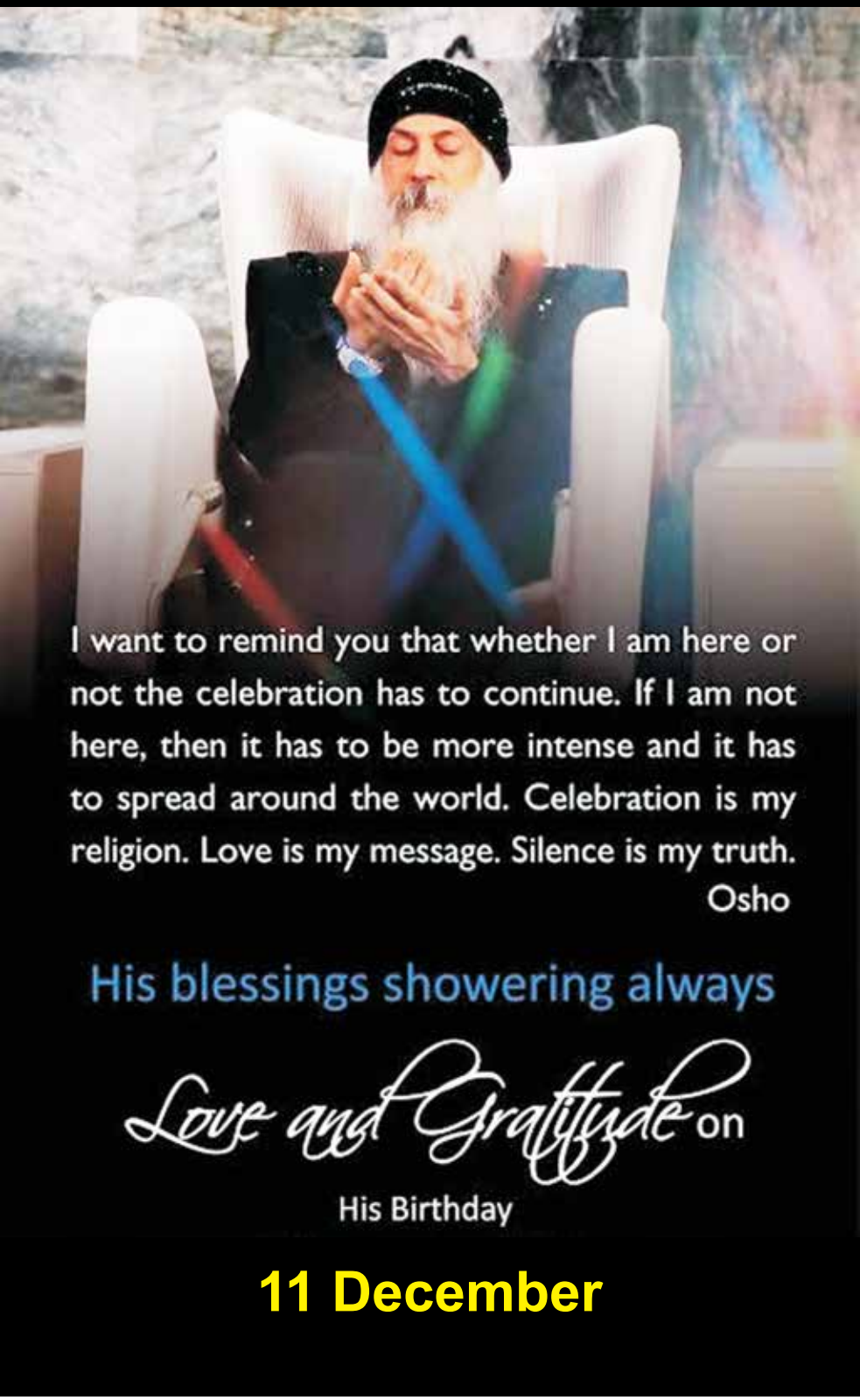
I want to remind you that whether I am here or not the celebration has to continue. If I am not here, then it has to be more intense and it has to spread around the world. Celebration is my religion. Love is my message. Silence is my truth.
Osho
His blessings showering always
Love and Gratitude on
His Birthday
11 December

मेरे प्रवचनों का ध्येय

ओशो

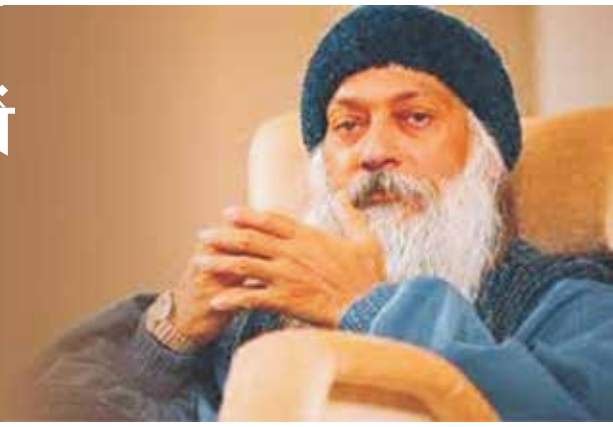

पूरे प्राणों से श्रवण की कला ध्यान है। यदि कोई सही ढंग से सुनना सीख जाए तो समझो उसने ध्यान का गहनतम रहस्य जान लिया।

ओशो वाणी का सारभूत कार्य है इस श्रवण की कला को सुगमता से सीखना। मौन की अनुभूति का एक अवसर, बिना किसी प्रयास के, अपने प्रतिदिन जीवन में पैनी सजगता लाने की कुंजी। आप अपने घर बैठे-बैठे चुपचाप इसे सुनना चाहें या काम पर जाते हुए या पार्क में बैठे हुए - ध्यान आज तक कभी भी, कहीं भी, किसी को भी इतनी सुगमता से उपलब्ध नहीं हुआ है। एक बार ओशो का प्रवचन चुन लेने पर स्वयं को विश्रांति में ले जायें और अपनी आंखें बंद कर लें। - संपादक

मेरे बोलने का ढंग जरा अलग है। संसार का कोई भी वक्ता मेरी तरह नहीं बोलता। तकनीकी तौर पर यह गलत है - इसमें लगभग दोगुना समय लगता है! परंतु उन वक्ताओं का लक्ष्य भिन्न है। मेरा ध्येय उनसे सर्वथा भिन्न है। वे इसलिए बोलते हैं कि उन्होंने पहले से तैयारी की है। वे केवल उसे दोहरा रहे हैं जिसकी रिहर्सल उन्होंने पहले से की है। दूसरी बात, वे किसी विचारधारा, किसी विचार-विशेष को आपके ऊपर आरोपित करने के लिये बोल रहे हैं। तीसरे, उनके लिये

बोलना एक कला है जिसे वे निखारते चले जाते हैं।

जहां तक मेरी बात है, मैं कोई वक्ता या सुवक्ता नहीं हूं। यह मेरे लिये कोई तकनीक या कला नहीं; तकनीकी तौर पर तो मैं दिन-प्रतिदिन और खराब होता चला जाता हूं। परंतु मेरे व उनके ध्येय सर्वथा भिन्न हैं। आपको अपने हिसाब से चलाने के लिये मैं आपको प्रभावित नहीं करना चाहता। आपको अपनी बात से राज़ी करवा कर मुझे कुछ हासिल नहीं करना है। मैं तुम्हें ईसाई, हिन्दू, मुसलमान, आस्तिक या नास्तिक बनाने के लिये नहीं बोलता। मुझे इनसे कोई सरोकार नहीं।

मेरा बोलना वास्तव में ध्यान की विधियों में से एक विधि है। बोलने का ऐसा प्रयोग इससे पहले कभी भी नहीं हुआ। मैं बोलता हूं -इसलिये नहीं कि तुम्हे कोई संदेश देना है परंतु यह तुम्हारे मन की गति को रोकने के लिये है। मैं कुछ तैयार कर के नहीं बोलता। मुझे स्वयं ही पता नहीं होता कि मेरा अगला शब्द क्या होगा; इसीलिये मैं कोई भूल नहीं करता। भूल कोई तब कर सकता है अगर उसने पहले से तैयारी की हो। मैं कभी कुछ भूलता नहीं क्योंकि भूलता वही है जो कुछ याद कर रहा हो। अतः मैं स्वतंत्रता से बोलता हूं। ऐसे शायद ही कभी कोई बोला हो।

आपको अपने हिसाब से चलाने के लिये मैं आपको प्रभावित नहीं करना चाहता

मैं चिंता नहीं लेता कि मेरी बात संगतिपरक है या नहीं क्योंकि वह मेरा ध्येय नहीं। एक व्यक्ति जो आपको अपनी बात मनवाना चाहता है और आपको अपने भाषण द्वारा नियंत्रित करना चाहता है उसे तर्कयुक्त तथा बुद्धिपरक होना ही पड़ेगा। वह शब्दों द्वारा आपके ऊपर हावी होना चाहेगा।

मेरा ध्येय बहुत अनूठा है :

मैं शब्दों का प्रयोग मौन-अंतराल पैदा करने के लिये कर रहा हूं। शब्द उतने महत्वपूर्ण नहीं इसलिये मैं कोई भी बात -

विरोधाभासी, बेतुकी, असंगत कह सकता हूं। क्योंकि मेरा ध्येय केवल अंतराल पैदा करना है। शब्द गौण हैं। उन शब्दों के बीच के मौन महत्वपूर्ण है। बस यह आपको ध्यान की झलक देने की तरकीब है। और एक बार आप यह जान जायें कि यह आपके लिये संभव है तो समझो कि आपने अपनी ओर यात्रा प्रारंभ कर दी।

विश्व में बहुत से लोग ऐसा नहीं सोचते कि मन के लिये मौन होना संभव है क्योंकि वे सोचते हैं कि ऐसा संभव ही नहीं तो वे प्रयास भी नहीं करते। मेरे बोलने का मुख्य ध्येय यह था कि मैं लोगों को ध्यान का स्वाद दे सकूं। मैं आपसे सदा बोलता रहूं इस बात की फिक्र नहीं कि क्या बोलूँ, उसकी सार्थकता यह है कि मैं आपको मौन होने के अवसर दे पाऊं, और शुरु में आपको कठिनाई हो सकती है।

मेरे बोलने का मुख्य ध्येय यह था कि मैं लोगों को ध्यान का स्वाद दे सकूं

मैं आपको मौन रहने के लिये तो विवश नहीं कर सकता परंतु एक तरकीब निर्मित कर सकता हूं जिससे आप सहजता से मौन हो ही जायेंगे। मैं बोल रहा हूं और एक वाक्य के बीच में जब आप अगले शब्द की प्रतीक्षा कर रहे थे वहां कुछ नहीं बस एक अंतराल आ जाता है। आपका मन कुछ सुनने की आशा में, कुछ आगे की प्रतीक्षा कर रहा था और उसे चूकना नहीं चाहता था तो स्वभावतः यह मौन हो जाता है।

बेचारा मन कर भी क्या सकता है? अगर इसे पहले पता होता कि मैं कौन से बिंदुओं पर चुप हो जाऊंगा, अगर आपको बता दिया जाता कि मैं इन इन बिंदुओं पर चुप हो जाऊंगा तो आपके विचार जारी रह सकते थे, आप मौन न हो पाते। तब आपको पता होता है कि : 'यह वह बिंदु है जहां वे चुप हो जायेंगे; अब मैं स्वयं से कुछ बातचीत जारी रख सकता हूं।' परंतु क्योंकि यह अचानक हो जाता है... मुझे भी मालूम नहीं कि कुछ बिन्दुओं पर मैं क्यों ठहर जाता हूं।

विश्व के किसी भी वक्ता की ऐसा कुछ भी करने पर आलोचना होगी क्योंकि उसके बार-बार रुकने का अर्थ यह है कि वह पूरी तैयारी से नहीं आया है। उसने अपना गृह-कार्य नहीं किया है। इसका अर्थ है कि उसकी स्मृति भरोसे योग्य नहीं है, कि उसे प्रयोग करने के लिये शब्द नहीं मिल रहे। परंतु

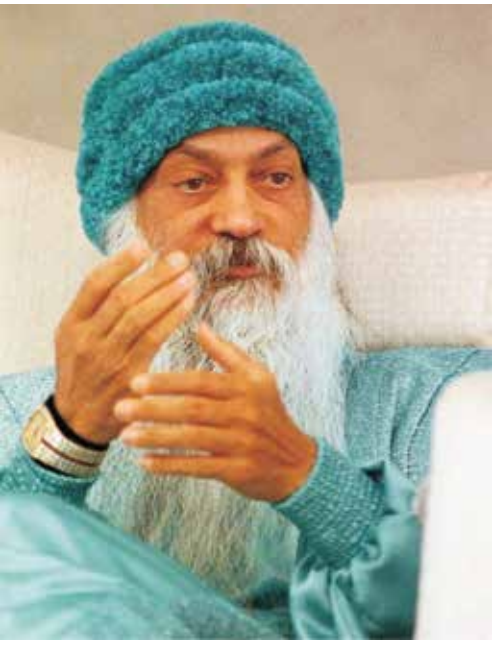

मेरे साथ मौन होना अधिक आसान है

क्योंकि मैं कोई वक्ता नहीं हुं अतः मुझे उन लोगों की चिंता नहीं है जो मेरी आलोचना करेंगे - मेरा सरोकार आपसे है। ऐसा यहां ही नहीं है बल्कि दूर कहीं... विश्व में कहीं भी जहां लोग मेरे ऑड़ियो या वीडियो को सुनेंगे, उन्हें वहां भी इसी मौन की अनुभूति होगी। मेरी सफलता आपको नियंत्रित करने में नहीं बल्कि आपको वास्तविक स्वाद देने में है ताकि आपको भरोसा आ जाये कि ध्यान केवल किंवदंती नहीं, कि अ-मन की दशा एक दार्शनिक धारणा मात्रा नहीं बल्कि एक वास्तविकता है; कि आपमें इसे पाने की क्षमता है और इसके लिये कोई विशेष योग्यता की आवश्यकता नहीं।

मेरे साथ मौन होना अधिक आसान है। मैं मौन हूं; यहां तक कि जब मैं बोल भी रहा हूं तब भी मौन हूं। मेरा अंतरतम केंद्र इसमें लिप्त नहीं है। मैं जो कह रहा हूं वह मुझ पर कोई खलल, बोझ या तनाव नहीं है; मैं नितांत विश्रांति में हूं। बोलने या न बोलने से मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता। स्वभावतः ऐसी दशा संक्रामक है।

क्योंकि मैं आपको ध्यान के क्षणों में स्थापित करने के लिये पूरा दिन तो बोल नहीं सकता। तो मैं चाहता हूँ कि आप एक जिम्मेदार व्यक्ति हो जायें। यदि आप यह स्वीकार कर लेते हैं कि आपमें मौन होने की क्षमता है तो यह बात आपके लिये सहायक होगी जब आप अकेले में ध्यान कर रहे होंगे अपनी क्षमता को जानना... और अपनी क्षमता को आप तभी जान पाते हैं जब आपको इसका अनुभव हो जाता है। इसे जानने का अन्य कोई उपाय नहीं है। अपने मौन के लिये सारा उत्तरदायित्व मुझ पर न डालें क्योंकि उससे आपको कठिनाई होगी। अकेले आप क्या करेंगे? तब यह एक प्रकार का व्यसन हो जायेगा और मैं स्वयं को आपकी आदत बनने नहीं देना चाहता। मैं तुम्हारा व्यसन बनना नहीं चाहता। मैं तुम्हें स्वयं सिध्द देखना चाहता हूँ, आत्मविश्वास से भरा देखना चाहता हूं ताकि इन अमूल्य घड़ियों को तुम स्वयं पा सको।

यदि तुम इन्हें मेरे साथ पा सकते हो तो कोई कारण नहीं कि इन्हें मेरे बिना न पा सको क्योंकि कारण मैं नहीं। तुम्हें समझना होगा कि क्या हो रहा हैः मुझे सुनते हुए तुम अपने मन को एक ओर रख देते हो। सागर को सुनते हुए, बादलों की गर्जन सुनते हुए, जोर से गिरती बारिश को सुनते हुए, अपने अहंकार को एक ओर रख दो क्योंकि इसकी कोई आवश्यकता नहीं... सागर तुम पर आक्रमण नहीं करने वाला, बारिश तुम पर आक्रमण नहीं करने वाली, पेड़ तुम पर आक्रमण नहीं करने वाले, अपने आगे ढाल रखने की कोई आवश्यकता नहीं। जीवन जैसा है, अस्तित्व जैसा है उसके प्रति संवेदनशील हो कर तुम इन घड़ियों को निरंतर पाते रहोगे। शीघ्र ही यह तुम्हारी जीवनचर्या हो जायेगी। तुम जहां भी, घर पर, कार्य के दौरान या दोनों के बीच, तुम किसी भी ध्वनि, किसी भी कोलाहल को अपने भीतरी मौन व शांति की ओर जाने का सुअवसर बना सकते हो। □

दि इनविटेशन -14

ओशो के अनूठे ध्यान

भगवान श्री रजनीश (BSR) चैनल के स्वामी राघव सत्यार्थी ने इंटरव्यू की भूमिका में कहा :

ओशो द्वारा निर्मित सैंकड़ों ध्यान विधियों के बारे में अधिकांश साधकों को जानकारी नहीं है। केवल कुछ विधियाँ ही प्रसिद्ध हैं; जैसे- डाइनैमिक, कुंडलिनी, नादब्रह्म, कीर्तन, व्हाइट रोब ब्रदरहुड, नटराज आदि। इस धारावाहिक साक्षात्कार में हम उन विधियों के बारे में चर्चा करना चाहेंगे, जिनका ज्ञान ज्यादा लोगों तक नहीं पहुँच पाया है।

ओशो की अनेक पुस्तकों के संकलन, संपादन, अनुवाद कार्य में संलग्न रहे हैं - स्वामी शैलेन्द्र सरस्वती जी और मा अमृतप्रिया जी। सन् 1998 से आप दोनों देश-विदेश में ध्यान शिविरों का संचालन करते आए हैं। 50 किताबों का लेखन और 150 से अधिक ओशो-भजनों का सृजन किया है। 2005-2017 तक 12 साल आस्था टेलिविजन चैनल पर ओशो के संदेश का प्रसार किया है। श्रद्धा टेलिविजन पर इनके नियमित प्रवचन और नेपाल के टेलिविजन पर दर्जनों इंटरव्यू आ चुके हैं। आइए, इनसे ध्यान पद्धतियों के बारे में जानकारी हासिल करते हैं आज के साक्षात्कार में। इस वार्ता का मुख्य बिंदु है : ओशो के अनूठे ध्यान प्रयोग।

कोविड महामारी के दौरान आप लोगों ने हर दूसरे सप्ताह ऑनलाइन ध्यान शिविर की प्रक्रिया आरंभ की, वह आज भी जारी है। डेढ़ साल से अधिक हो गया ऑफलाइन शिविर की शुरुआत हुए। ओशो के चरणों में समर्पित आप लोगों की अति व्यस्तता एवं कार्यशैली में निरंतर नवीनता देख कर मन में विस्मय, हृदय में अहोभाव भी उत्पन्न होता है।

इंटरव्यू के दौरान दिए 5 सवालों के जवाब निम्नांकित क्वोरा लिंक पर भी उपलब्ध हैं :

1. नित नूतन विधियाँ क्यों? *https://qr.ae/pv0KVy*

2. सामूहिक शक्तिपात *https://qr.ae/pv0Kxc*

3. विराट ध्यान आंदोलन *https://qr.ae/pv0Kx4*

4. कूर्मासन ध्यान विधि *https://qr.ae/pv0KDD*

5. अध्यात्म - विज्ञानों का संगम *https://qr.ae/pv0Kms*

11 दिसम्बर को प्यारे सद्गुरु ओशो का जन्मोत्सव है। इसके उपहार-स्वरूप 10 तारीख से आरम्भ होने वाले ऑनलाइन शिविर में इन्हीं अनूठी ध्यान विधियों का प्रयोग सिखाया जाएगा। मित्रों से निवेदन है कि अपने ध्यान केन्द्र अथवा निवास स्थान पर अन्य जिज्ञासुओं को आमंत्रित करके एक सप्ताह के लिए सामूहिक साधना में डूबें। जूम पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रम को टीवी स्क्रीन पर दिखाने की व्यवस्था भर आपको करनी है। बस समय का भी कोई बंधन नहीं। सुबह 6.30 से 8 बजे तक लाइव प्रसारण की रिकार्डिंग पुनः 11 बजे से अगले दिन 6 बजे सुबह तक उपलब्ध रहती है। □

Osho's Birthday Gift to Us

On his 46th birthday celebration at Pune in 1977, Osho gave the gift of this Message to his sannyasins

MY BELOVED ONES : I love you. Love is my message let it be your message too. Love is my color and my climate. To me, love is the only religion. All else is just rubbish, all else is nothing but mind-churning dreams. Love is the only substantial thing in life, all else is illusion. Let love grow in you and God will be growing on its own accord. If you miss love you will miss God and all. There is no way to God without love. God can be forgotten if love is remembered, God will happen as a consequence. It happens as a consequence. It is the fragrance of love and nothing else. In fact there is no God but only godliness.

There is no person like God anywhere. Drop all childish attitudes, don't go on searching for

a father. Divineness is, God is not. When I say divineness is, I mean whatsoever is, is full of God. The green of the trees, and the red and the golden all is divine. This crow crying, and a bird on the wing. And a child giggling, and a dog barking all is divine. Nothing else exists.

The moment you ask 'Where is God?' you have raised a wrong question. Because God cannot be indicated anywhere. He is not in a particular direction, He is not a particular thing, He is not a particular being. God is universality. Ask where God is not, then you have asked the right question. But for that right question you will have to prepare the soil of your heart. That's what I mean by love preparing the soil of your heart. If you are full of love, the world is full of God. They go parallel, they are part of one symphony. God is the echo from the universe. When you are in love, the echo is there. When you are not in love, how can there be an echo? It is only you who are reflected again and again in millions of ways,

If you are full of love, the world is full of God.

it is you who are thrown back to yourself again and again. If you are in love, God is. If you are not in love, then what to say about God? even you are not.

I was thinking what should I give to you today? Because this is my birthday, I was incarnated into this body on this day. This is the day I saw for the first time the green of the trees and the blue of the skies. This was the day I for the first time opened my eyes and saw God all around. Of course the word 'God' didn't exist at that moment, but what I saw was God. I was thinking what should I give to you today? Then I remembered a saying of Buddha: **'Sabba Danam Dhamma Danana Jnati'** the gift of truth excels all other gifts. And my truth is love. The word 'truth' looks to me a little too dry and desert-like. I am not in much tune with the word 'truth'. It looks too logical, it looks too 'heady'. It gives you the feeling of philosophy, not of religion. It gives you the idea as if you have concluded that you have come to a conclusion, that there has been a syllogism behind it, argumentation and logic and reasoning. No, 'truth' is not my word, 'love' is my word.

Love is of the heart. Truth is partial, only your head is involved. In love you are involved as a totality your body, your mind, your soul, all are involved.

Love makes you a unity and not a union, remember, but a unity. Because in a union those who join together remain separate. In a unity they dissolve, they become one, they melt into each other. And that moment I call the moment of truth, when love has given you unity.

First, love gives you unity in your innermost core. Then you are no more a body, no more a mind, no more a soul. You are one simply unnamed, undefined, unclassified. No more determinate, definable, no more comprehensible. A mystery, a joy, a surprise, a jubilation, a great celebration.

In love you come to an utter relaxation. That's my teaching to you, I teach love. And there is nothing higher than love.

First, love gives you an inner unity. And when the inner unity has happened the second happens on its own you are not to do anything for it. Then you start falling in unity with the whole beyond you. Then the drop disappears in the ocean and the ocean disappears into the drop. That moment, that moment of orgasm between you and the whole, is where you become a Buddha. That moment is the moment Buddhahood is imparted to you. Or, better, revealed to you,

you have always been that, unaware.

My word is love. So I say : My beloved ones, I love you. and I would like you to fill the whole world with love. Let that be our religion.

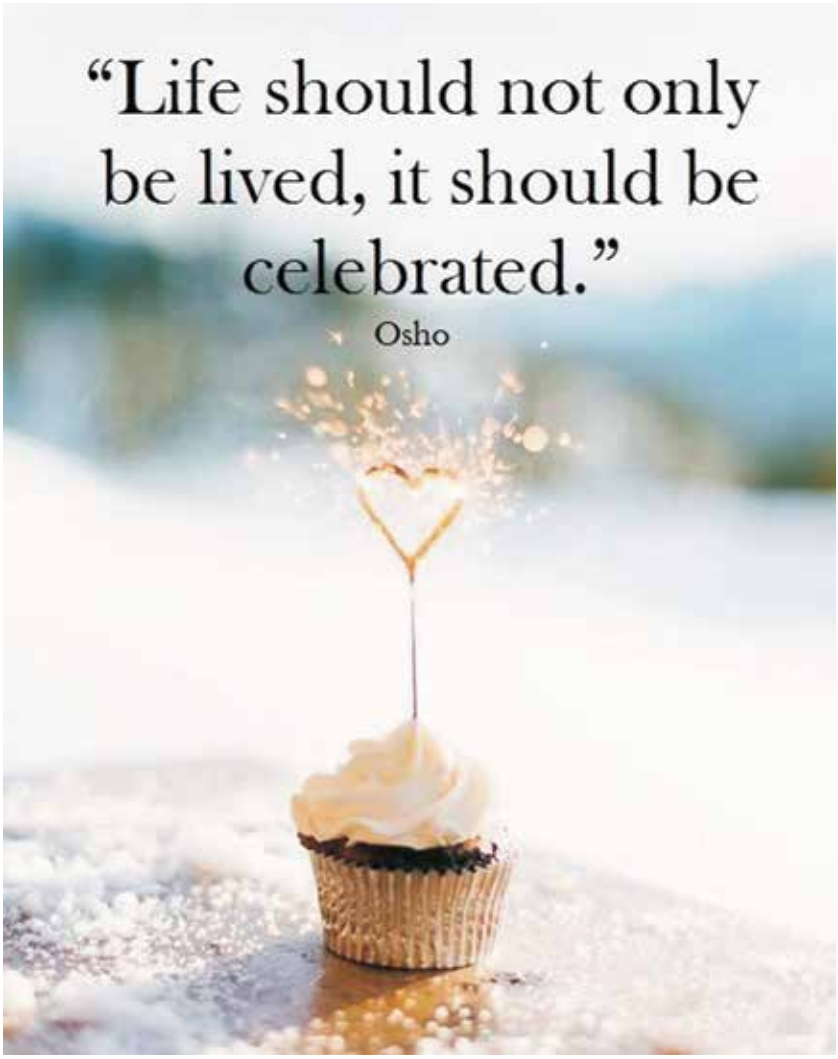

Not Christianity, not Hinduism, not Islam, not Jainism, not Buddhism, but love. Love without any adjective to it. Not Christian love because how can love be Christian? It is

so stupid. How can love be Hindu? It is ridiculous. Love is simply love. In love you can be a Christ, in love you can be a Buddha but there is no Buddhist love and there is no Christian love. In love you disappear, your mind disappears.

In love you come to an utter relaxation. That's my teaching to you, I teach love. And there is nothing higher than love.

Then I thought I should give you something beautiful on this day. And I remembered Hakuin's Song of Meditation. It is a very small song, but a great gift. Hakuin is one of the greatest Zen masters. His song contains all : all the Bibles and all the Korans and all the Vedas. A small song of few lines, but it is like a seed very small, but if you allow passage to it to your heart, it can become a great tree. It can become a Bodhi tree, it will have great foliage and much shade and thousands of people can sit and rest underneath it. It will have big branches and many birds can come and have their nests on it. See I have become a tree. You are the people who have come to make their nests on my tree. You can also become this. Everybody 'should' become this, because unless you become this you will go on missing your fulfillment. Unless you become

a great tree, which has come to its foliage, flowers and fruits which is fulfilled, you will remain in discontent. Anguish will go on gnawing in your heart, misery will linger around you. Bliss will be only a word, signifying nothing. God will be just gibberish. When you have fulfillment then there is grace and then there is God. In your fulfillment you come to realize the benediction of existence.

This is a song of meditation. Hakuin has called it 'song' yes, it is a song. If meditation is without a song it is do and dead. It does not beat it, does not breathe. It is a song and a dance : sing it and dance it. Just don't think upon it, then you will miss the messages, you will miss its content. You will find this song and its meaning only when you are singing and dancing. When the music of life has overtaken you, has possessed you. □

- This Very Body the Buddha, chp - 1

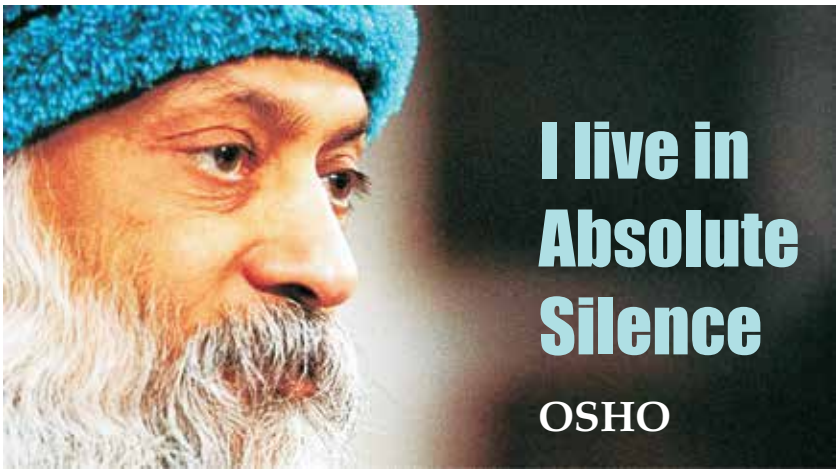

Beloved Osho, As far as you are concerned, is your birthday just like any other day in the year? Or is it in some way special for you?

Time exists no more for me. That's why I have to go on looking at my watch, because I don't have any sense of time. If I don't look at my watch, I may speak for the whole night! To me, every day is the same, every moment is the same. But when I say every moment is the same, it means it has the same blissfulness, the same ecstasy, the same joy, the same silence, the same peace that pass the understanding. I don't see any difference between two points, between two days. As far as I am concerned, all differences have disappeared. I live in absolute silence. Even while I am speaking to you, believe it or not, I am silent. Only the mechanism of the mind is being used, but my consciousness is centered in absolute beauty and silence. □

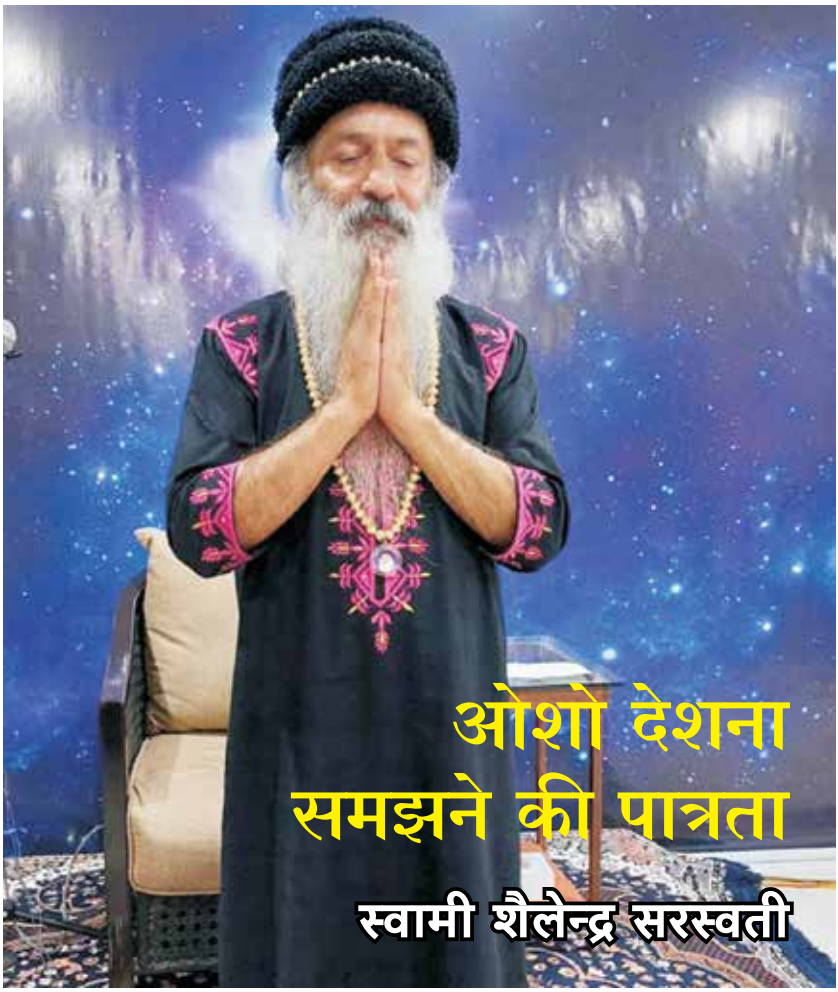

ओशो देशना समझने की पात्रता

स्वामी शैलेन्द्र सरस्वती

प्रश्न - ओशो की देशना सब लोग समझ क्यों नहीं पाते?

मुझे तो शक है आप भी समझ पाए या नहीं! वर्ना यह बात भी समझ जाते कि सब लोग क्यों नहीं समझ पाते। आप दूसरे क्षेत्रों में इस प्रकार के सवाल क्यों नहीं पूछते? दो मिनट के लिए ओशो की देशना को भूल जाइए।

मैं दूसरे प्रश्न आपके सामने रखता हूँ। आइन्सटीन की रिलेटिविटी का प्रिंसीपल सारे लोग क्यों नहीं समझ पाते? ई इक्वल टू एम सी स्कवैयर- इस फार्मूला को दुनिया के सब लोग क्यों नहीं समझ पाते? रविन्द्रनाथ टैगोर की गीतांजलि को सब लोग क्यों नहीं समझ पाते। कभी पढ़ी है? आप तारीफ जरूर करते होंगे कि नोबल पुरस्कार मिला है इस देश

के महाकवि को। जरा पढ़कर देखो। चार पेज से आगे न पढ़ पाओगे। कुछ समझ में न आएगा। आप क्यों नहीं पूछते कि पिकासो या फिदा हुसैन की पैन्टिंग सब लोग क्यों नहीं समझ पाते? आपने देखी है फिदा हुसैन की पैन्टिंग जो कुछ समय पूर्व दो करोड़ में बिकी थी? आप उसे दो हजार रुपये में भी नहीं खरीदेंगे। क्योंकि आपकी समझ के ऊपर से निकल जाएगी। अन्य चीजों के बारे में ऐसे सवाल क्यों नहीं उठाते?

ओशो की बात भी वही समझ पाएंगे जो विकसित हुए हैं अध्यात्म क्षेत्र में। जो व्यक्ति गणित और फिजिक्स या हायर मैथेमैटिक्स पढ़ेगा, उसको ही आइन्स्टीन की बात समझ आएगी। आप कहेंगे कि हद हो गई के.जी. स्कूल के बच्चे क्यों नहीं समझ पाते? के.जी. स्कूल के बच्चे नहीं समझ पाएंगे। फिजिक्स में एम.एस.सी., पी.एच.डी. करने वाले सब लोग भी नहीं समझ पाएंगे। आइन्स्टीन ने स्वयं लिखा है कि मेरी बात को समझने वाले इस समय दुनिया में ज्यादा से ज्यादा एक दर्जन लोग हैं, बस। आप पढ़ो सापेक्षिकतावाद का सिद्धान्त, आप का सिर चक्कर खाने लगेगा।

हम सब लोग साधारण जगत की बात भी नहीं समझ पाते। शास्त्रीय संगीत कितने लोग समझते हैं? भीड़ का रस नहीं है शास्त्रीय संगीत में। हाँ, आम जनता फिल्मी म्युजिक समझती है। आम जनता औसत बुद्धि की बातें समझती है। कोई भी उच्चत्तर बात उसकी समझ में नहीं आती। तो धर्म की श्रेष्ठतम बात कैसे समझ में आएगी?

इस सम्बन्ध में एक चुटकुला आपसे कहना चाहूँगा। कल किसी ने मुझे मैसेज किया था। लालू प्रसाद यादव हवाई जहाज में यात्रा कर रहे थे। ऐयर होस्टस ने आकर पूछा कि सर आर यू वैजिटेरियन? उनको अंग्रेजी समझ में नहीं आई। परिचारिका ने हिन्दी में पूछा कि आप वैजिटेरियन हैं या नॉन वैजिटेरियन। लालू प्रसाद ने कहा कि अरे यह क्या होता है, मैं तो इंडियन हूँ इंडियन। ऐयर होस्टस ने पुनः पूछा कि आप

शाकाहारी हैं या मांसाहारी? लालू प्रसाद ने कहा कि अरे बिहारी हूँ बिहारी, तुझे इतना भी नहीं मालूम!

हमें साधारण-साधारण बातें समझ नहीं आतीं। मत पूछो कि ओशो की देशना सबको समझ में क्यों नहीं आती। बुद्ध और महावीर की बात कितने लोगों को समझ में आई और राम व कृष्ण की बात कितने लोगों को समझ में आईं? याद रखना कृष्ण का एक भी शिष्य नहीं हुआ। अगर लोगों को बात समझ में आती तो कुछ तो शिष्य हो जाते। एक भी शिष्य न हुआ। याद रखना अर्जुन उनका शिष्य नहीं था। वह तो बेचारा मुसीबत में फंस गया था और कृष्ण उसको उपदेश देने लगे। जबरदस्ती गुरु बन बैठे। उसने कुछ पूछा नहीं था। वह तो घबड़ा गया था, धनुष-बाण उसने नीचे रख दिए थे। हाथ-पैर उसके कंपने लगे थे, यह दृश्य देखते ही कि अपने ही लोगों को मारना होगा। इस तरफ भी अपने ही लोग हैं। उस तरफ भी अपने ही रिश्तेदार हैं। इनका खून-खराबा करना होगा। यह देखकर उसको डिप्रेशन का दौरा आ गया। कृष्ण उसको उपदेश देने लगे। उस बेचारे ने कुछ पूछा न था। वह कोई शिष्य नहीं था। इसलिए वह हर जवाब में से नए सवाल उठाता गया, पूछता ही गया। अठारह अध्याय लम्बी प्रवचन माला चली। उसकी समझ में कुछ नहीं आया। उसने सोचा कि इनसे सिर लड़ाने की बजाय कौरवों से लड़ लो। अरे कब तक बकवास चलेगी? कब तक? खत्म ही नहीं हो रही गीता। वह सवाल पर सवाल पूछे जा रहा है। कृष्ण तर्क पर तर्क दिए जा रहें। उसने कभी शिष्यत्व नहीं स्वीकारा।

कृष्ण को उसने अपना मित्र समझा था। कृष्ण को उसने

सारथी बनाकर बिठाया था। अगर कृष्ण को वह गुरु समझता तो कम से कम सारथी के पद पर तो न बिठाता। सारथी यानि पुराने जमाने का ड्राइवर। कृष्ण घोड़ों की देखभाल करते, दाना-पानी देते होंगे। घोड़ों को नहलाते होंगे, लीद साफ करते होंगे... सारथी का काम करते होंगे। अर्जुन ने उनको ड्राइवर की पोस्ट पर रखा था, गुरु नहीं माना था।

फिर महाभारत में आगे कहानी आती है कि जब पाण्डवों की मृत्यु होती है तब केवल युधिष्ठिर और उनका कुत्ता स्वर्ग में प्रवेश पाते हैं। बाकी सारे पाण्डव स्वर्गारोहण करते हुए रास्ते में गल जाते हैं। अर्जुन को भी मोक्ष प्राप्त नहीं होता। स्पष्ट है कि कृष्ण की देशना अर्जुन के किसी काम नहीं आई। अर्जुन ने कुछ नहीं सीखा। अगर सीखा होता तो मोक्ष प्राप्त होता। युधिष्ठर के कुत्ते को मुक्ति मिल गई मगर अर्जुन को नहीं मिली। भगवान कृष्ण की गीता काम नहीं आई।

कल ही एक सज्जन ने पूछा था कि हम गुरु ग्रन्थ साहिब का रोज पाठ करते हैं किंतु फिर भी घर में शान्ति क्यों नहीं रहती? प्रायः यह सवाल मेरे सम्मुख आता है कि हम तो रोज गीता पाठ करते हैं मन में शान्ति क्यों नहीं होती? जब कृष्ण भगवान मौजूद थे तब शान्ति न हो पाई, महाभारत का भीषण नर-संहार हुआ। तुम भी गजब कर रहे हो, गीता पढ़कर घर में शान्ति लाने की कोशिश कर रहे हो। गुरु ग्रन्थ साहिब लिखने वाले गुरुओं को तलवारें चलानी पड़ीं, युद्ध लड़ना पड़ा। उनके जीवन-काल में शान्ति स्थापित न हो पाई। उनका ग्रन्थ पढ़कर तुमको शान्ति कैसे मिल जाएगी?

जरा सोचो तो सही। कैसे अंधेपन की बात कर रहे हो! यदा-कदा समझने वाले पैदा होते हैं। भीड़ नासमझों की है। वे हर अर्थपूर्ण बात का अनर्थ कर देते हैं। कृष्ण ने, सिक्ख गुरुओं ने, ओशो ने जो कहा है वह भीड़ की समझ नहीं आ सका, नहीं आ सकेगा। ऐसी वस्तुस्थिति है। तथ्य ऐसा है - तथाता! □

जीवन और मृत्यु ध्यान

रात्रि, सोने से पूर्व, पंद्रह मिनट का यह ध्यान करें। यह एक मृत्यु ध्यान है। लेट जाएं और शरीर को ढीला छोड़ दें। भाव करें कि आप मर रहे हैं। और आप अपना शरीर नहीं हिला सकते, क्योंकि आप मर गए हैं। बस भाव करें कि आप शरीर से हट रहे हैं। दस-पंद्रह मिनट तक यह भाव करते रहें और एक सप्ताह के भीतर आप इसे बिलकुल अनुभव करेंगे। यह ध्यान करते-करते ही सो जाएं। ध्यान जारी रहे ध्यान करते-करते ही नींद में चले जाएं। जब आपको नींद आने लगे तो सो जाए। सुबह जिस क्षण आपको लगे कि आप जाग गए है - अभी अपनी आंखे मत खोले - पहले जीवन ध्यान करें। भाव करें कि आप पूर्णरूप से जीवत हो रहे हैं, कि जीवन वापस आ रहा है और पूरा शरीर शक्ति और ऊर्जा से भर रहा है। बिस्तर पर हो, आंखें बंद रखे हुए, हिलना और झूमना शुरू कर रहे हैं। अनुभव करें कि आपमें प्रगाढ़ जीवन प्रवाहित हो रहा है। अनुभव करें कि शरीर में ऊर्जा की बाढ़ आई हुई है - मृत्यु ध्यान से बिलकुल विपरीत।

तो मृत्यु ध्यान रात में सोने से पहले करें और जीवन ध्यान सुबह उठने से ठीक पहले करें। जीवन ध्यान करते समय आप गहरी साँसें ले सकते हैं। प्राण ऊर्जा को, जीवन को श्वास के साथ भीतर आता हुआ अनुभव करें। स्वयं को ऊर्जा से लबालब, बहुत आनंदित और जीवंत अनुभव करे। फिर पंद्रह मिनट के बाद बिस्तर से उठें। □

ध्यान विज्ञान - 86

मेरा मार्ग : सफ़ेद बादलों का मार्ग

ओशो

प्रश्न : प्यारे सदगुरु ओशो, आपका मार्ग सफेद बादलों का मार्ग क्यों कहलाता है?

देह त्यागने के ठीक पूर्व गौतम बुद्ध से किसी ने पूछा : 'जब एक संबुद्ध व्यक्ति शरीर छोड़ता है तो वह कहां जाता है? क्या वह शेष बचता है या शून्य में विलीन हो जाता है?'

यह सवाल जरा भी नया नहीं था। यह बड़ा प्राचीन प्रश्न है जो बहुत बार पूछा जा चुका है। उस दिन भी जब बुद्ध से पूछा गया तो वे बोले : 'जैसे कोई सफेद बादल देखते-देखते विलीन हो जाता है..!'

आज ही सुबह यहां आकाश में शुभ्र बादल घिरे थे। और अब वे नहीं हैं। वे सब कहां से आए थे? वे कहां चले गए? वे बने कैसे और मिटे कैसे? वे क्यों प्रकट हुए और क्यों विलीन हो

गए? उनका आना, उनका जाना, उनका होना सब रहस्यमय है! यही पहला कारण है कि मैं अपने मार्ग को श्वेत बादलों का मार्ग कहता हूं। परंतु कई अन्य कारण भी हैं और अच्छा होगा कि उन सब को समझा जाए, उन पर भी ध्यान दिया जाए।

पहली बात, बादल की जड़ें नहीं होतीं। वह निर्मूल है, 'कहीं-नहीं' आधारित है, फिर भी 'अभी-यहीं' में स्थापित है। (अंग्रेजी में इन दोनों शब्दों की स्पैलिंग समान है : ग्राउन्डेड नो-व्हेअर और ग्राउन्डेड इन नाऊ-हियर') निराधार होते हुए भी बादल का अस्तित्व तो है। ऐसे ही यह जीवन भी बादल की तरह हैः जड़-हीन, कार्य-कारण सिद्धांत से परे, बिना किसी उद्देश्य के, फिर भी है, एक रहस्य की भांति मौजूद है!!

वस्तुतः बादल के पास अपना कोई मार्ग नहीं होता। वह हवा में उड़ता फिरता है, किसी मस्त-मौला घुमक्कड़ की तरह। कहीं पंहुचने की उसे जल्दी नहीं। कोई मंजिल नहीं, कोई नियति नहीं। वह कभी उदास या कुंठित नहीं होता क्योंकि वह जहां भी है वहीं उसकी मंजिल है। यदि तुम्हारा कोई लक्ष्य है तो तुम्हारा निराश होना सुनिश्चित है। जितना अधिक

लक्ष्य-केन्द्रित चित्त होगा, उतना ही अधिक दुखी होगा, उद्विग्न और निराश होगा। जब तुम्हारे सम्मुख कोई लक्ष्य होता है तो तुम एक निश्चित मुकाम की ओर चलते हो। तुम इधर-उधर नहीं मुड़ सकते; जबकि अस्तित्व का कोई गंतव्य नहीं है। यह जीवन कहीं जा नहीं रहा। कोई लक्ष्य नहीं, कोई उद्देश्य नहीं है।

उद्देश्य के आते ही तुम अखंड अस्तित्व के विरोध में हो जाते हो और स्मरण रहे, तब कुंठा की खाई में गिरते हो। एक अंश मात्र होकर, तुम विराट के विरुद्ध कभी जीत नहीं सकते। इस ब्रह्मांड में तुम्हारा होना धूल-कण मात्र है, तुम लड़कर विजयी नहीं हो सकते। यह असंभव है कि बूंद सागर से जीते या अंश पूर्ण को परास्त करे..निश्चित ही कोई व्यक्ति, समष्टि पर विजय प्राप्त नहीं कर सकता। जीवन है लक्ष्यहीन और तुम हो लक्ष्य से बंधे; तो निस्संदेह तुम ही हारोगे।

यदि तुम्हारा कोई लक्ष्य है तो तुम्हारा निराश होना सुनिश्चित है।

बादल तिरता रहता है, जहां भी हवाएं ले जाएं। कोई विरोध नहीं, कोई संघर्ष नहीं। वह कोई योद्धा नहीं है। बादल कोई विजेता नहीं है, फिर भी संपूर्ण धरा पर पूरी गरिमा से मंडराता फिरता है। कोई उसे हरा नहीं सकता, क्योंकि उसके मन में जीतने की आकांक्षा नहीं है।

एक बार मन ने कोई लक्ष्य, उद्देश्य, मंजिल निर्धारित कर ली तो तुम उस तक पहुंचने के पागलपन में पड़ोगे और तत्क्षण समस्याएं खड़ी हो जाएंगी। तुम हारोगे, यह सुनिश्चित है। तुम्हारी पराजय अस्तित्व के होने के ढंग में ही निहित है।

बादल को कहीं भी नहीं जाना है। बस स्वच्छंद विचरण करता है, सर्वत्र घूमता है। सारे आयाम उसके हैं और समस्त दिशाएं उसकी हैं। उसे कुछ भी अस्वीकृत नहीं है। हर चीज जहां है,

जैसी है; उसे समग्र भाव से स्वीकृत है। इसीलिए मैं अपने मार्ग को बादलों जैसा सहज मार्ग कहता हूं।

मेघों के पास, पहले से तय किया हुआ कोई रास्ता, कोई नक्शा नहीं होता। वे निरुद्देश्य हवा में उड़ते फिरते हैं। रास्ते का अर्थ होता है कि तुमने चुन लिया कि तुम्हें कहीं पंहुचना है। बादलों को कहीं भी नहीं पंहुचना है इसलिए उनके रास्ते का अर्थ हुआः 'मार्गरहित मार्ग' या पथविहीन पथ।' निर्धारित लक्ष्य के बगैर, मन के बगैर बादल में गति तो है, साथ ही अ-मन की स्थिति भी है। इसे ठीक से समझ लेना जरूरी है, क्योंकि हमारे लिए उद्देश्य और मन पर्यायवाची हैं। उद्देश्यहीन जीवन की कल्पना भी मुश्किल है। बगैर उद्देश्य के मन जीवित नहीं रह सकता।

बहुत लोग मेरे पास आकर हास्यास्पद प्रश्न करते हैं कि 'ध्यान का प्रयोजन क्या है?' ध्यान का कोई भी प्रयोजन हो नहीं सकता, क्योंकि मौलिक रूप से ध्यान अ-मन की अवस्था है। ऐसी स्थिति, जहां बस तुम हो, कहीं आना-जाना नहीं है। चाहो तो कह लो कि ध्यान का लक्ष्य 'यहीं और अभी' मौजूद है : तुम्हारा अंतर्तम।

जैसे ही गंतव्य कहीं दूर होता है, मन उस ओर यात्रा शुरू कर देता है। मंजिल के बारे में सोच-विचार की प्रक्रिया में संलग्न हो जाता है। भविष्य के साथ ही चित्त गति कर सकता है। लक्ष्य के आते ही भविष्य आता है और भविष्य के साथ समय आता है।

श्वेत बादल समयातीत आकाश में मंडराता है, उसके पास न मन है और न भविष्य है। वह यहीं और अभी है, उसका हर क्षण पूर्ण शाश्वत है। चूंकि बिना लक्ष्य के मन बच नहीं सकता, इसलिए अपना वजूद बनाए रखने के लिए, मन नए-नए उद्देश्य पैदा किए चले जाता है। यदि लौकिक लक्ष्य पूरे हो गए, तो तथाकथित पारलौकिक लक्ष्यों की तरफ लालायित

होता है। अगर धन व्यर्थ हो गया तो ध्यान उपयोगी हो जाता है। यदि सांसारिक प्रतियोगिता और राजनीति निरर्थक हो गई, तो तथाकथित स्वर्ग आदि की होड़ शुरु हो जाती है; धार्मिक उपलब्धियां सार्थक बन जाती हैं। मगर मन सदैव किसी न किसी प्रयोजन की कामना से ग्रस्त रहता है। जबकि मेरे अनुसार, केवल वही मन धार्मिक है, जो लक्ष्यहीन है। इसका मतलब है कि मन, वस्तुतः मन की तरह तब बचता ही नहीं। ऐसे मन-रहित बादल की तरह स्वयं को महसूस करो।

तिब्बत में एक सुंदर ध्यान विधि है; वहां भिक्षु पहाड़ियों पर नितांत अकेले में, आकाश में मंडराते हुए बादलों पर ध्यान लगाते हैं। क्रमश : वे खुद भी बादलों की भांति, रूप से अरूप में खोने लगते हैं। धीरे-धीरे वे बादल जैसे ही हो जाते हैं - निर्विचार, स्वयं के होने में प्रफुल्लित! कोई विरोध नहीं, कोई संघर्ष नहीं। कुछ पाना नहीं, कुछ खोना नहीं, केवल होना! वर्तमान क्षण के आनंद में मग्न, वे अपने होने का उत्सव मनाते हैं।

इसीलिए मैं अपने मार्ग को श्वेत मेघों का मार्ग कहता हूं और चाहता हूं कि तुम भी गगन में मंडराते इन बादलों के समान

हो जाओ। मैं किसी गंतव्य की ओर निर्धारित दिशा में गति करना नहीं सिखा रहा हूं - सिर्फ तिरना है, जहां भी हवाएं तुम्हें ले जाएं; बस, उसी तरफ निर्विरोध बहते जाना है। जहां कहीं भी पंहुच जाओ, वही तुम्हारा लक्ष्य है। लक्ष्य किसी सीधी रेखा की भांति नहीं है जिसके आरंभ और अंत के बिंदु तय हैं। जीवन का कोई ओर-छोर नहीं है। प्रत्येक क्षण स्वयं में एक लक्ष्य है।

तुम सब सिद्ध हो, बुद्ध हो। तुम्हारे पास एक संपदा है। तुम अपनी समग्रता और परिपूर्णता में हो। तुम सक्षम हो, बिल्कुल बुद्ध, महावीर और कृष्ण की भांति। तुम क्या खोज रहे हो? ठीक अभी, इसी क्षण में, सब कुछ यहीं तो है; केवल तुम सतर्क नहीं हो। और तुम सजग इसलिए नहीं हो पाते क्योंकि तुम्हारा मन भविष्य में डोल रहा है। तुम वर्तमान में नहीं हो। तुम इसके प्रति बिल्कुल भी जागरूक नहीं हो कि वर्तमान के क्षण में कुछ महत्त्वपूर्ण घटित हो रहा है। और ऐसा सदा-सदा से हो रहा है। लाखों जन्मों से यह होता चला आ रहा है। 'हर क्षण तुम एक बुद्ध' हो। एक पल के लिए भी तुम बुद्धत्व के अनुभव से अछूते नहीं रहे। और कभी चूक भी नहीं सकते, क्योंकि स्वाभाविक रूप से सत्य ऐसा है, चीज़ें ऐसी हैं। □

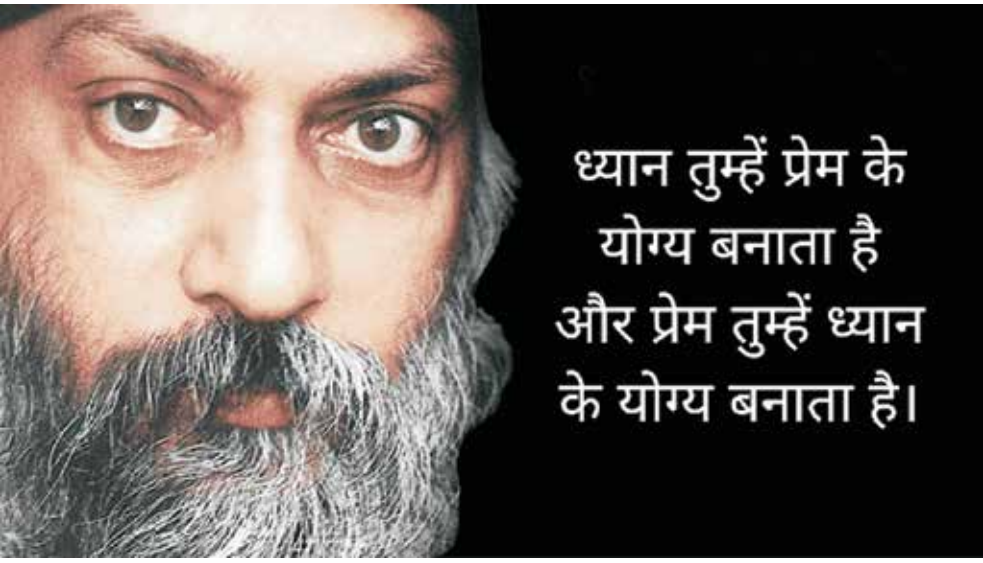

राम की महिमा : ओशो की दृष्टि में

ओशो की सात किताबों के शीर्षक राम शब्द पर आधारित हैं। क्यों? इनका भावार्थ क्या है? राम का नाम किस ओर संकेत करता है?

1 नहिं राम बिन ठांव

2 राम दुवारे जो मरै

3 राम नाम जान्यो नहीं

4 पीवत राम रस लगी खुमारी

5 मैंने राम रतन धन पायो

6 राम नाम रस पीजै

7 राम नाम निज औषधि

कोटेशन पढ़ने के लिए लिंक *https://qr.ae/prXTsn*

इंटरव्यू वीडियो लिंक *https://youtu.be/Fi-Qzq02wak*

Insight into Sannyas Names

Prabhu means god and prakash means light -- God's light. And that's what every human being is. So feel more and more full of light.

That's the way to come closer to the original source. Feel more and more full of light. Whenever you close your eyes, just see light streaming all over your being. In the beginning it will be imagination, but imagination is very creative, and to you it is going to be very creative.

So just imagine a flame near the heart and imagine that you are full of light. Go on increasing that light. It becomes almost dazzling... dazzling! And not only you will start feeling it; others will also start feeling it. Whenever you are close to them, they will start feeling it, because it vibrates.

It is everybody's birthright but one has to claim it. It is an unclaimed treasure. If you don't claim it, it remains dead, buried under

the ground. Once you claim it, you have claimed your own inner being.

Light is going to be your centre of focus. So wherever you see light, feel deep reverence. Just something ordinary -- a lamp is burning, and you just feel a deep reverence, a certain awe. In the night there are stars... just watch

them and feel connected. In the morning, the sun rises. Watch it and let the inner sun also rise with it. And whenever you see light, immediately try to make contact with it -- and soon you will be able to.

Imagination is going to be your path, so never deny imagination. It is the only creative faculty in man, the only poetic faculty, and one should not deny it. Denied, it becomes very revengeful. Denied, it becomes a nightmare. Denied, it becomes destructive. Otherwise it is very creative. It is

creativity and nothing else. But if you deny it, if you disown it, you start a conflict between your own creativity and yourself, then you are going to be a loser.

Science can never win against art and logic can never win against love. History can never win against myth and reality is poor compared to dreams, very poor. So if you carry any idea against imagination, drop it. Because we all carry it -- this age is very anti-imagination. People have been taught to be factual, realistic, empirical and all sorts of nonsense. People should be more dreamy, more childlike, more ecstatic. People should be able to create euphoria. And only through that do you reach to your original source.

That is the meaning of God being creative, or of God being the creator. He must be a tremendously imaginative person. Just look at the world! Whosoever created it or whosoever dreamed it, must be a great dreamer... so many colours and so many songs. The whole existence is a rainbow. It must come out of deep imagination.

In the East Hindus call 'maya', illusion, God's greatest power. They say God creates through maya. 'Maya' means the dream faculty, the imaginative faculty. Take the imagination from a poet and he is an ordinary man. Take imagination from God

and He is nothing. Take imagination from a painter and he remains a technician. All glory is lost. And man is losing religion because man is losing imagination. And as I can see you, a great imaginative heart is there in your heart, waiting to flower. Help it.

So be emphatically imaginative. Allow it full functioning and everything is going to happen through it. God is to enter in you through your dreams. So dream... and dream with a full heart.

A dream has its own reality, a separate reality, but its own. And it is closer to the reality than what we see with our eyes in the outside world, because it is closer to the subjectivity. So don't be worried that it is imagination, don't bring in that question. Just move into it, allow it, play in it.

Much is going to happen, so be expectant! □

A rose is a rose is a rose - 16

अध्यात्म प्रेमियों के संग शेयर कीजिए

ओशो का सामूहिक शक्तिपात

प्रश्न : हमें इस बात की तो जानकारी है कि ओशो एक-एक व्यक्ति को ऊर्जा दर्शन देते थे। क्या उन्होंने सामूहिक शक्तिपात के प्रयोग भी किए हैं? निवेदन है कि हमे इस बारे में बताएं।

जब ओशो मुंबई में रहते थे तब उन्होंने सामूहिक शक्तिपात का प्रयोग भी किया। उस समय गीता के 12वें अध्याय पर प्रवचन चल रहा था। और एक दिन एक प्रवचन में उन्होंने कहा कि कल प्रवचन नहीं होगा। जो लोग

सोचते हैं कि केवल सुनना है उन्हें और सुनकर कुछ नहीं करना उनके लिए कल छुट्टी है। और उसके बाद उन्होंने प्रयोग के लिए इंस्ट्रक्शन दिए कि कल वह लोग आएं जो अत्यंत संकल्पवान है, अपनी दीवानगी को जाहिर करने के लिए तैयार है। और उन्होंने बताया कि एक फूल लेकर आएंगे। सब के हाथों में फूल होगा और पूरे रास्ते भर कल्पना करेंगे, यह धारणा करेंगे कि इस फूल में मेरा अहंकार विसर्जित हो रहा है। फूल को देखेंगे, महसूस करेंगे, सूंघेगे ऐसे ही सुघेंगे जैसे अपने अहंकार को ही स्मेल कर रहे हैं और आंख बंद करके भी इसी धारणा को और गहराएंगे कि इस फूल में मेरा अहंकार है।

उन्होंने फ़िर कहा कि जैसे-जैसे अहंकार आने लगेगा उसमें, आपको महसूस होगा कि यह फूल भारी होने लगा और धीरे-धीरे यह मुरझा भी जाएगा। जब आप फूल लेकर आएंगे तो उन्होंने कहा आप अपनी जगह पर बैठे रहेंगे और जब तक आपको इंस्ट्रक्शन ना दूं तब तक आप फूल को हाथ में ही लेकर बैठे रहेंगे और इस भाव को गहराते जाएंगे कि यह मेरा अहंकार है। इसके बाद चरण बताएं कि इस प्रयोग को कैसे करना है।

उन्होंने कहा पहला चरण जिसमें कि तुम्हें मेरी आंखों में

एकटक देखना है। लगातार बिना पलक झपके, पानी भी आने लगे, आंसू भी आने लगे लेकिन एकटक देखना है। बस केवल दो ही बचे, तुम और मैं; ओशो और देखने वाला व्यक्ति। बस जब केवल दो ही बचे जब केवल यह दोनों आंखें और कुछ नहीं बचता तो इन आंखों से मैं तुम में प्रवेश करूंगा और तुम्हारे भीतर की सारी नेगेटिविटी, सारी विक्षिप्तता सारे रोग मैं खींच लूंगा, सब कर लूंगा। और एक नई ऊर्जा से, जब तुम केवल तुम मेरे लिए उपलब्ध रहोगे मैं इन आंखों से तुम्हारे भीतर प्रवेश कर जाऊंगा।

दूसरा चरण उन्होंने बताया, दूसरे चरण में आपको मौन बैठना है। पहले चरण में एकटक देखना है और अपनी विक्षिप्तता को निकालना है, फेंकना है, चीखना, चिल्लाना, दुख-संताप जो भी बाहर आता है बिल्कुल बाहर फेंक देना है, बिल्कुल पागल हो जाना है। और उसके बाद के चरण में शांत, बिल्कुल मूर्तिवत बैठ जाना है। कुछ करना नहीं है। 20 मिनट का चरण था जिसमें अपनी विक्षिप्तता को निकालना है फ़िर अगले 20 मिनट कुछ भी नहीं करना, ना हिलना, ना डुलना, बस एक मूर्ति बैठी हुई है शांत निश्चल।

अगले चरण में फिर उन्होंने कहा कि अब इस शांति में जो एक अभूतपूर्व अनुभव हुआ है, जिसको कि तुमने कभी अनुभव किया कुछ आनंद और शांति के पल तुमने महसूस किए हैं अब उसे अभिव्यक्ति दो, अब अहोभाव में उसे बहने दो। कीर्तन हो सकता है, कोई कीर्तन गाने का मन हो। एक

दूसरे को बाहर नहीं देखना, भीतर अपने भीतर क्या आ रहा है बस उसकी अभिव्यक्ति। नृत्य आ रहा है, कीर्तन आ रहा है, ढोलना आ रहा है अथवा कुछ भी नहीं आ रहा है, मौन आ रहा है, जो आ रहा है उसे फॉलो करना है।

उसके बाद इस चरणों कि उन्होंने वैज्ञानिकता बताई कि जब मैं तुम्हारे भीतर प्रवेश करूंगा तो तुम्हें परमात्मा का अनुभव होगा। और वह अनुभव कैसा होगा? उसका उन्होंने एक कहानी बताकर, घटना बताकर इशारा दिया। इशारा क्या बिल्कुल ही स्पष्ट कर दिया।

एक जिप्सी किसी गांव में गए थे। और गांव के बच्चों को जिप्सी उठाकर लेकर जाते थे तो एक बच्चा उन्होंने उठा लिया। बच्चा पिता के साथ ही चर्च में रहता था। और बच्चे को वह उठाकर अपनी बैलगाड़ी में बैठा लिया। बच्चे को कुछ समझ में नहीं आया। बहुत छोटा था, नासमझ था, वह देखता रहा तमाशा। बैठ गया और गाड़ी चलती जा रही, चलती जा रही है।

उसको समझ में कुछ आ गया कि अब कुछ कोलाहल हो रहा है, कुछ मेरे लोग नहीं है, कुछ अंजाना-सा माहौल है। अब घबराहट शुरू हो गई लेकिन कुछ कर नहीं सकता था। उसे मात्र कुछ घंटियां सुनाई दे रही थी, चर्च में जो घंटियां बजती थी। उस घंटियों को वह सुनता रहा, सुनता रहा, सुनता रहा। सुनते-सुनते वह मूर्छित हो गया, अर्ध निंद्रा में पहुंच गया। और उसके बाद उसने पाया कि वह जिप्सियों के गांव में है, कबीले में है।

फिर वह बड़ा हुआ लेकिन वह घंटियों की याद हमेशा बनी रही। सब कुछ भूल गया गांव भी भूल गया, गांव का नाम भी भूल गया। पिता की शक्ल भी भूल गया, पिता का नाम भी भूल गया लेकिन वह घंटियां नहीं भूला। उन घंटियों को वह हमेशा सुनने का प्रयास करता रहा। एक दिन भीतर कुछ

हुआ उसे और उसने वह कबीला छोड़ दिया। इतना संकल्प और साहस जुटाया कि अब उसे छोड़ देना है और अपनी जगह कैसे भी पहुंचना है।

उन घंटियों को सुनते सुनते वह हर गांव जाता, चर्च के पास खड़ा हो जाता घंटियों को सुनता। जगह-जगह गया। 5 साल बाद, उसको वो घंटियां सुनाई पड़ी एक चर्च के सामने। उसने गौर से सुना, फिर दूर जाते हुए भी उन घंटियों को सुना। ठीक वैसे ही घंटी थी जैसे कि उसने बचपन में सुनी थी, जिसकी धूमिल की स्मृति रह गई थी। उन घंटियों को, उसने रिकॉग्नाइज कर लिया उस आवाज को। खास आवाज थी उन घंटियों की उसे फॉलो करते हुए अब वह चर्च में पहुंच गया और उसके बूढ़े पिता मिल गए। वह उनके चरणों में गिर गया।

पिता बोले तुम कैसे पहचाने मुझे। मैं तो भूल ही गया मेरा बेटा खो गया। तुम कैसे मुझ तक आए? उसने बताया कि मैं सब कुछ भूल गया था, लेकिन मुझे इन घंटियों की आवाज कभी नहीं भूली। वह मेरे अवचेतन में रह आई और मैं बस उसे सुनने के लिए बेचैन रहा। हर मंदिर हर चर्च मैं सुनता रहा। इस चर्च के सामने मुझे इस आवाज ने आपसे मिला दिया। मुझे इस घंटी की आवाज में, मुझे मेरे पिता से मिला दिया।

ओशो कहते हैं कि जो मौन में बैठोगे, मौन में इसलिए बैठना है वह घंटियां जब तुम्हें सुनाई पड़े, जीवन में कभी भी सुनाई पड़े समझ लेना कि परमात्मा के घर के बिल्कुल निकट हो तुम। उन्होंने इशारा दिया और इस ध्यान का पूरा मकसद यही कि सामूहिक रूप से शक्तिपात के द्वारा जो हम जन्मों में कर पाएं, हमारी मेहनत करते-करते हम कभी सफल हो पाएं इसकी भी संभावना है या नहीं, उसकी झलक उन्होंने हजारों लोगों को 60,000 से ऊपर लोगों को एक साथ देने का प्रयोग किया। वो ओंकार नाद, वह परमात्मा का संगीत, वह घंटियां सुनाने का उन्हें इशारा दिया, प्रयोग करवाया और कृपा की। यह है उनका शक्तिपात ध्यान। □

अधिक जानकारी व संपर्क सूत्र

Osho fragrance Numbers -
9464247452, 9311806388, 9811064442,
9466661255, 9890341020, 8889709895

Youtube page - Rajneesh Fragrance

Facebook page - Rajneesh Fragrance

Instagram - Osho Fragrance

Twitter - Rajneesh Fragrance

oMeditate App -
Osho Fragrance's Mobile App+++

Keep up to date with Osho Fragrance program schedules and live events. Read the latest articles, Osho books, watch the newest videos on various topics, listen to bhajans by Ma Amrit Priya Ji, and participate in guided meditation techniques.

Ask questions to our Masters Swami Shailendra Saraswati and Ma Amrit Priya. Get automatic notifications on key events and daily quotes of Osho wisdom.

Download our official Android App on google play store by searching oMeditate or by clicking on monogram/Logo

Note: The contents are getting updated daily, please keep watching this space for more to come.

Download Osho Hindi & English Books from the link -

link for books - http://oshofragrance.org/books

contact@oshofragrance.org

ओशो सुगंध के पिछले अंक...

ओशो सुगंध मासिक ई-पत्रिका जो पढ़ी, देखी और सुनी भी जा सकती है तथा जिसमें समाधि में डूबने, आनंद व भाव-विभोर से भरपूर प्रवचनो और भजनों के ऑडियो-वीडियो लिंक्स दिए गए हैं।

नियमित रुप से ई-पत्रिका प्राप्त करने हेतू, अपने मोबाइल नं. को पंजीकृत करवाने के लिए सामने दिए गए चिह्न को दबाएं।

पत्रिका को खोलने के लिए पुस्तक वाले चिह्न को दबाएं।

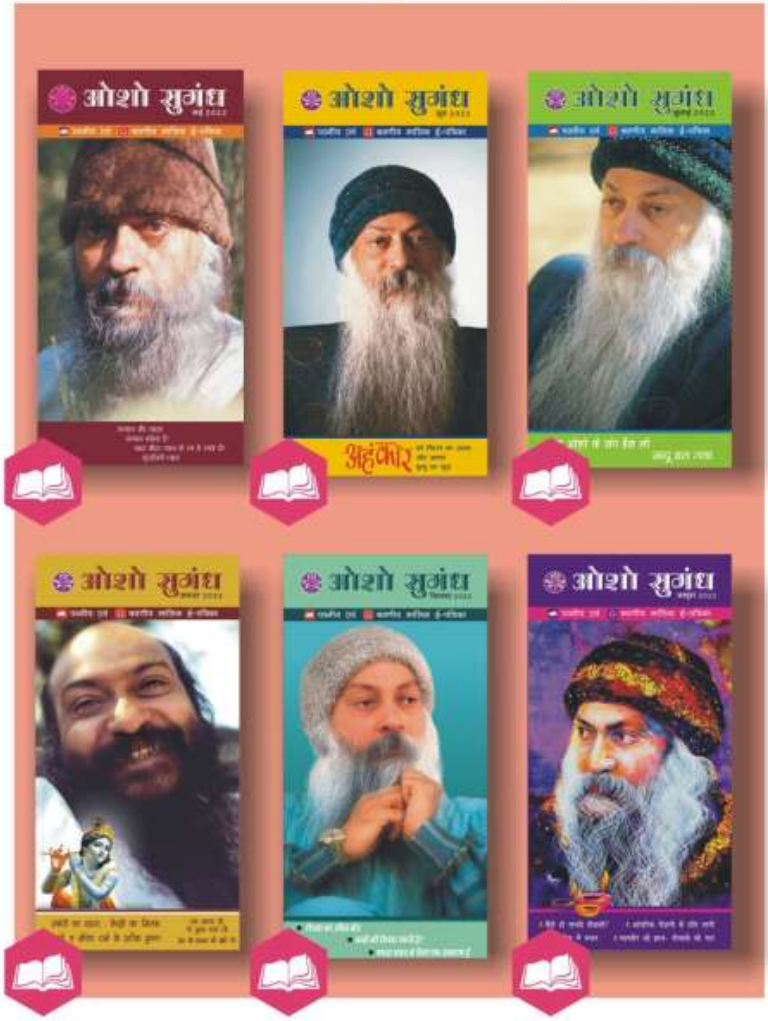

अभी तक के सभी अंकों के लिए चिह्न को दबाकर उन्हें देख सकते हैं।

क्या आप
ओशो सुगंधा
नियमित प्राप्त करना चाहते हैं

यह एक जीवंत पत्रिका है
नीचे दिए गए चिह्न को
स्पर्श करने से
आपका संदेश हम तक
पहुँच जाएगा
और पत्रिकाएं नियमित रूप से
आप तक
भेजने के लिए आप का
मोबाइल न.
पंजीकृत हो जाएगा।

ओशो के बारे में भारत के भिन्न-भिन्न क्षेत्र के लोगों के विचार

अरूणा मुणोत के संकलन से

उनके शब्द सुवास की भांति हैं जिनमें मैं सांस लेती हूँ।

– अमृता प्रीतम

ओशो ने भारत की नब्ज़ पकड़ ली है। वे वहीं से इलाज कर रहे हैं। उनका कार्य कठिन किन्तु परम आवश्यक है

– डॉ. हरिवंशराय बच्चन

जो सामान्य अध्यापकी से उठकर दुनिया भर पर छा गया; जिसे २ गज़ जमीन देने के लिए कोई देश राजी न हुआ; ऐसे प्रभावशाली व्यक्ति को हवा में कैसे उड़ाया जा सकता है।

– नवभारत टाइम्स

ओशो ने विचार प्रसार का आसान रास्ता स्वीकार नहीं किया। उन्होंने दूसरे भगवानों की तरह भोली आस्थाओं के टोटके नहीं बेचे। वह वेद उपनिषद के दो चार सूत्र तोते की तरह रट कर नहीं बोलते थे। उन्हें बने बनाए भक्त नहीं मिले। उनमें सरलता भी है, गहराई भी है और मानव मन की गांठों को खोलने की कोशिश भी है।

– धर्मयुग

ओशो ने जीवन को ही नहीं, मृत्यु को भी सिखाया है।

– दैनिक हिन्दुस्तान

कोई ऐसा पहलू न था जिस पर उनके मौलिक विचारों ने तहलका न मचाया हो

– संडे मेल

ओशो ने चेतना के अंतिम स्तर को स्पर्श किया है।

– पद्मभूषण गोपालदास नीरज

ओशो के होने से यह दुनिया सम्मानित हुई है। यह देश सम्मानित हुआ है।

– पद्मविभूषण अमृता प्रीतम

ओशो बने बनाये सिद्धांत नहीं देते।

– पद्मभूषण जगजीत सिंह

ओशो के प्रवचन पेंटिंग्स हैं।

– पद्मभूषण एम.एफ.हुसैन

ओशो का साहित्यिक खजाना मेरी निजी पुस्तकालय और जीवन में मेरे लिए हमेशा प्रेरणा का स्त्रोत बना रहेगा। ओशो की दृष्टि एक प्रभावशाली संकेतक और क्रांतिकारी विचार प्रक्रिया है जिसकी महत्ता आज भी जीवन, समाज, अध्यात्म और राजनीतिक विषयों पर कायम है।

– नरेन्द्र मोदी

ओशो का विवादित न होना आश्चर्यजनक होता।

– सोनल मानसिंह

भारत में बुद्ध के बाद दूसरा अवतार थे ओशो।

– लामा करमापा

पुष्पांजलि के नवीनतम अंक के अवलोकनार्थ क्लिक करें

देश की पहली साहित्यिक ई-पत्रिका जो पढ़ी और सुनी भी जा सकती है तथा जिसमें संगीत के लिंक्स भी है जिनसे निर्मल आनंद उठाया जा सकता है।

मूल्य : मात्र आपकी मुस्कान

सामने दिए गए चिह्न को दबाने से आपका सन्देश स्वचलित रूप से हमें पहुँच जाएगा और नियमित पत्रिकाएँ भेजने के लिए आपका मोबाइल नं. पंजीकृत हो जाएगा।

8610502230 (केवल संदेश हेतु)

(कृपया अपना नाम व शहर का नाम भी लिखें)